: द्वितीय अध्याय :

आँचलिक उपन्यास : परिभाषा तथा स्वरूप

: द्वितीय अध्याय :

2.'आँचलिक उपन्यास : परिभाषा तथा स्वरूप'

2.1 अंचल : परिभाषा।

2.2 अंचल : स्वरूप ।

2.3 अंचल : प्रकार ।

2.4 शहरी और ग्रामीण अंचल में अंतर ।

2.5 आँचलिक उपन्यास : उद्भव और विकास।

2.6 आँचलिक उपन्यास : परिभाषा ।

2.7 आँचलिक उपन्यास : स्वरूप ।

2.8 आँचलिकता का महत्त्व ।

2.9 आँचलिक उपन्यासों में चित्रित विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन ।

2.9.1 राजनीतिक परिस्थिति।

2.9.2 सामाजिक परिस्थिति ।

2.9.3 धार्मिक परिस्थिति ।

2.9.4 आर्थिक परिस्थिति ।

2.9.5 सांस्कृतिक परिस्थिति।

2.9.6 मनोवैज्ञानिक परिस्थिति।

निष्कर्ष ।

2.1 अंचल : परिभाषा :-

'अंचल' शब्द की व्युत्पति संस्कृत के 'अञ्चल' शब्द से हुयी है। अंग्रेजी में जिसे 'रीजन' कहते हैं और मराठी में 'प्रादेशिक।' इस प्रत्येक शब्द की अपनी-अपनी खाँसियत है। उनका अपना-अपना अर्थ है।'अंचल' की परिभाषा अनेक विद्‌वानों ने की हैं। हर एक का अपना तरीका होता है। इसी कारण 'अंचल' की परिभाषाओं में भिन्नता मिलती है। 'अंचल' शब्द मूलत: अनेक विशेषताओं से भरा है। किसी एक विशेषता को लेकर उसकी परिभाषा नहीं की जा सकती है। विभिन्न कोशकारों ने 'अंचल' की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से की हैं -

(1) <u>हलायुध कोश</u> -

''आँचल: पु.(अंचति प्रांत भागं गच्छति। अँच + अलच)

वस्त्र प्रांत भाग:। आंचल इति भाषा।

अर्थ :- वस्त्र का भाग अथवा छोर।''[1]

(2) <u>हिंदी-शब्दसागर</u> -

''(1) साडी वा ओढ़नी का वह भाग जो सिर अथवा कंधे पर से होता हुआ सामने छाती पर फैला हुआ हो।

(2) साडी का छोर।आँचल। पल्ला। छोर। उपरना। अँचरा दुपट्टा।

(3) किसी प्रदेश या स्थान आदि का एक भाग।

(4) किनारा। तट।

(5) छोर । किनारा।

(6) कोर, जैसे नयनांचल में अंचल।

(7) तलहटी।घाटी।''[2]

(3) आधुनिक हिंदी शब्दकोश -

''अँचल : पु.सं.

(1) प्रांत, प्रदेश, क्षेत्र, पार्श्ववर्ती प्रदेश।

(2) वस्त्र का छोर, आँचल, पल्लू, सिरा, आँचला।''[3]

(4) राजपाल हिंदी शब्दकोश -

''अँचल सं. (पु.)

(1) देश या प्रांत का एक भाग, क्षेत्र।

(2) नदी का किनारा।

(3) पल्लू, आँचल।''[4]

(5) मानक हिंदी कोश -

''अँचल - पु.(सं ✓ अञ्च (गति) + अलच्)

(1) सीमा के आस-पास का प्रदेश।

(2) किसी क्षेत्र का कोई पार्श्व।

(3) किसी चीज के सिरे पर पडनेवाला भाग। सिरा।

(4) दे.'आँचल'।''[5]

विद्वानों की परिभाषाएँ -

(1) डॉ.ह.के.कढवे -

"अंचल में सीमित भूमि एवं जन जीवन में साधर्म्य अभिप्रेत है।"[6]

(2) शंभूसिंह -

"अंचल को समग्र रूप के एक भाग विशेष मानते हैं।"[7]

(3) डॉ.उषा डोगरा -

"आँचलिकता शब्द की संरचना में 'अंचल' शब्द का अर्थ और महत्त्व निर्विवाद है। सामान्यत: अंचल शब्द से आशय किसी प्रदेश विशेष से है।"[8]

(4) डॉ.रामदरश मिश्र -

"अंचल का संबंध प्रकृति से भी जुड़ा है - देहाती अंचल, वन्य अंचल, पहाड़ी अंचल आदि में जीवन और प्रकृति का गहरा संबंध दिखाई पड़ता है।"[9]

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखकर हम कह सकते हैं कि, कोशकारों ने दिए अंचल शब्द के अर्थ अनेक हैं, क्योंकि कोशकार हर बात को चारों ओर से परख लेता है। इसी कारण कोशों में एक ही शब्द के बहुत सारे अर्थ मिलते हैं। विद्वानों ने दी परिभाषाओं से यह सूचित होता है कि उन्होंने 'जनपद' और भौगोलिक सीमित प्रदेश को 'अंचल' माना है। उनकी परिभाषाएँ साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। 'अंचल' परिभाषा की विविध विद्वानों ने उपर्युक्त विशेषताएँ बताई हैं। अत: मेरी दृष्टि से अंचल की परिभाषा इसप्रकार है -

"किसी विशिष्ट सीमित भू प्रदेश के लोकजीवन, स्थानीय रंग, बोली, रहन-सहन, व्यवहार, विविध समस्याएँ सम्मीलित होकर ग्रामीण और शहरी के दुजाभाव में न अटका अन्य प्रदेशों से अलग प्रदेश 'अंचल' कहलाता है।"

2.2 अंचल : स्वरूप :-

अंचल का अपना अर्थ होता है। अंचल का प्रयोग प्रांतीय क्षेत्र या सीमांत प्रदेश के लिए किया जाता है। आँचलिक कृतियों का नायक प्रमुख रूप से अंचल का ही होता है। अंचल की सीमा, उसके पीछड़े और अविकसित रूप का ही विवरण उसमें होता है। ''एक विशिष्ट भौगोलिक सीमाओं में बँधा सीमित परिसर अंचल कहलाता है।''[10] अंचल का निर्माण स्वत: होता है। वह पूर्व नियोजित नहीं होता है। प्रत्येक अंचल की अपनी अपनी सीमाएँ होती हैं। उसमें अलग संस्कृति, लोकव्यवहार, लोकगीत, आदि की भरमार होती है। अंचल का समाज बिखरा हुआ मिलता है। विवाह, माँगलिक अवसरों के गीत, ग्रामदेवता, कुलदेवता, त्यौहार, आमोद-प्रमोद, लोककथाएँ, किवदंतियाँ, संपूर्ण जीवन व्यवस्था एक होती हैं। यह एक विशिष्टता है। डॉ.चंद्रेश्वर कर्ण का कहना है -

''किसी पर्वत शृंखला के सहारे बसा, किसी नदी के कूल पर स्थित, किसी सागर के तट पर फैला गाँव है, जिसकी बोली, उत्सव, त्यौहार, रहन-सहन, संस्कार, लोककथाएँ, लोकगीत आदि एक होते हैं, जिनकी समस्याएँ एक होती हैं।''[11]

अंचल में एक ग्राम, नगर या आदिम जीवन का ग्राम समूह, और वन प्रांत का विशेष भी आता है। अंचल के मिट्टी की एक अलग-सी सुगंध होती है। इसी कारण अंचल जीवन को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास आँचलिक कहा जा सकता है। प्रत्येक अंचल की अपनी एक विशिष्ट पहचान, खास रंगत या विशिष्टता होती है। डॉ.राजकुमारी सिंह जी के मतानुसार -

''कोई भी विशेष भाग या क्षेत्र की संस्कृति, रीति-रिवाज, सुख-दुख, जीवन प्रणाली, आचार-विचार, समस्याएँ, परंपराएँ, मान्यताएँ जिसकी अपनी होती हैं। उसे 'अंचल' कहा जाना स्वाभाविक है।''[12]

अंचल की भाषा अलग होती है। भाषा के कारण अंचल के विकास की सीढ़ियाँ पहचानी जाती है। अंचल का संबंध प्रादेशिकता, संस्कृति और प्रकृति से होता है। जनपद का सजीव वर्णन अंचल में मिलता है। इसी कारण अंचल को सिर्फ 'किसी वस्त्र का छोर', 'पल्लू', या 'सिरा' मानना उचित नहीं होगा।

अंचल का अर्थ विस्तार अधिक है। उसे कोई 'जनपद' से संबंधित मानता है तो कोई 'अन्य भू-भाग से भिन्न', कोई 'प्रदेश विशेष' के रूप में तो कोई 'सीमाबद्ध सांस्कृतिक क्षेत्रीयता' के रूप में स्वीकार करते हैं। उपन्यास के संदर्भ में अंचल कोशगत अर्थों से भिन्न अर्थ रखता है। ''अंचल शब्द से 'आँचलिक' विशेषण तथा 'आँचलिकता' भाववाचक संज्ञा का निर्माण हुआ है।''[13]

इसका मतलब है कि किसी एक अर्थ को लेकर अंचल की विशेषताएँ कहीं नही जा सकती बल्कि अधिकतम रूप में उसे भौगोलिक सीमित प्रदेश कहा जाए तो अच्छा होगा। जिसकी अपनी भाषा के साथ-साथ एक विशिष्ट संस्कृति भी हो।

2.3 अंचल : प्रकार :-

अनेक विद्वानों ने अंचल को विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया है। अंचल की अपनी विशेषताएँ रहती हैं, जिनको लेकर स्वातंत्र्योत्तर काल में विद्वानों ने उसके प्रकार किए। उनमें प्राय: ग्रामीण विभाग की परिस्थितियों का अधिकतम रूप में चित्रण मिलता है। विशिष्ट सीमांत भौगोलिक स्थिति का वर्णन, उसमें आनेवाली खास बातों का चित्रण अंचल कृति में प्राप्त होता है। अत: अंचल के प्रकार निम्न है -

(1) डॉ.आदर्श सक्सेना -

'' (1) जन-जीवन से संबंधित अंचल।

(2) जन-जातियों से संबंधित अंचल।''[14]

(2) डॉ.ह.के.कडवे -

''(1) आँचलिकता का आभास होनेवाले।

(2)आंशिक आँचलिक।

(3) विशुद्ध आँचलिक।''[15]

(3) <u>स्थान विशेष की दृष्टि से</u> -

"(1) ग्रामीण-ग्रामांचल पर लिखे उपन्यासों का समावेश इसमें होता है।

(2) नागरी-ग्राम के साथ-साथ नागरी स्थान विशेष का समावेश इसमें होता है।

(3) पहाड़ी - पहाड़ी अंचल वर्णन।

(4) सागरी - (नदी से संबंधित) अंचल।

(5) वन्यभूमि से संबंधित (या वन्य)।

(6) कमाऊ (कुमाँचल) अंचल।

(7) बंजरभूमि अंचल।"[16]

इन विविध प्रकारों पर उपन्यासकारों ने निम्न प्रकार के आँचलिक उपन्यास लिखे हैं -

(1) <u>ग्रामांचल</u> -

(1) बलचनामा - नागार्जुन - (दरभंगा - बिहार)।

(2) मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु - (पूर्णिया-बिहार)।

(3) दु:खमोचन - नागार्जुन - (दरभंगा - बिहार)।

(4) कब तक पुकारूँ - रांगेय राघव - (ब्रज-राजस्थान)।

(5) परती : परिकथा - फणीश्वरनाथ रेणु - (पूर्णिया-बिहार) ।

(6) सती मैया का चौरा - भैरवप्रसाद गुप्त - (अजयगढ़ - उ.प्रदेश)।

(2) नदी अंचल -

(1) ब्रह्मपुत्र - देवेंद्र सत्यार्थी - (ब्रह्मपुत्र नदी परिसर (असम))।

(2) अधखिला फूल - हरिऔध उपाध्याय (`सरजू` नदी का चित्रण)

(3) पानी के प्राचीर - रामदरश मिश्र - (गौरखपुर)।

(3) नागर अंचल -

(1) बहती गंगा - शिवप्रसाद मिश्र - (बनारस-काशी)।

(2) काका - रांगेय राघव - (आगरा)।

(3) बूँद और समुद्र - अमृतलाल नागर - (लखनऊ का चौक वर्णन)।

(4) सागर आँचल -

(1) सागर, लहरें और मनुष्य - उदयशंकर भट्ट - (सागरी मछुआरों का वर्णन)

(5) पर्वत या पहाड़ी अंचल -

(1) मृगनयनी - वृंदावनलाल वर्मा - (ग्वालियर)।

(2) हिरना साँवरी - मनहर चौहान - (बस्तर - छत्तीसगढ़)।

(3) कगार की आग - हिमांशु जोशी - (लर्षौन)।

(6) कुर्मांचल -

(1) अरण्य - हिमांशु जोशी - (अल्मोड़ा - खेतीखान) ।

(7) विशिष्ट स्थान अंचल -

(1) दीर्घतपा - फणिश्वरनाथ रेणु ।

(8) जन - जातीय अंचल -

(1) मृगनयनी - वृंदावनलाल वर्मा - (आहिर, गूजर, नट) ।

(2) सागर, लहरें और मनुष्य - उदयशंकर भट्ट - (मछुआरा - कोली)।

(3) कब तक पुकारूँ - रांगेय राघव - (करनट)।

(4) कगार की आग - हिमांशु जोशी - (लोहार)।

(5) अरण्य - हिमांशु जोशी - (ब्राह्मण)।

अलग-अलग क्षेत्रों के कारण उस क्षेत्र की प्राचीन मान्यताएँ, रूढ़ि, आचार-विचार, रहन-सहन, लोकसंस्कृति, परंपराएँ, सामाजिक परिवेश, उनकी विशेषताएँ, जातीयता, प्रकृति, भौगोलिक स्थान आदि बातों की जानकारी आँचलिक उपन्यासों द्वारा मिलती हैं। इसी कारण आँचलिक प्रकारों पर लिखे उपर्युक्त उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं।

2.4 शहरी और ग्रामीण अंचल में अंतर :-

भारत एक बहुरंगी और बहुढंगी देश है। भारतीय संस्कृति मूलत: एक होते हुए भी अनेक अनदेखे, अनजाने अंचलों में बिखरी मिलती है और ऊँचे स्तर पर ग्रामीण विभाग में संस्कृति की सत्यता अधिकतर दिखाई देती है। अब स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर ग्रामों में अंतर मिलता है। भारत ग्रामों का देश है। आज भी 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में रहती हैं। भारत की मूल संस्कृति और आत्मा का दर्शन गाँवों में मिलता है। गाँवों के उद्धारों के साथ ही देश की उन्नति हो सकती है। इसलिए ग्रामांचल महत्त्वपूर्ण माना जाता है। आँचलिक उपन्यासों में वातावरण के भौगोलिक परिवेश का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक होता है। इसलिए विशिष्ट काल के संदर्भ में विशिष्ट परिवेश के जन-जीवन की कथा कहना आँचलिक उपन्यास का लक्ष्य होता है। शहरों जैसी जटिलता ग्रामांचल में नहीं होती। ग्रामीण अंचल में मध्यवर्गियों के वास्तविकताओं का चित्रण होता है। अत: संघर्ष या अन्य कारणवश ग्राम-जीवन कठिन बन सकता है, लेकिन मूल रूप में उसमें कठिनाइयाँ नहीं मिलती। ग्रामों में सब के एक दूसरे से पारिवारिक संबंध होने के कारण सुख-दुख का बँटवारा भी हो सकता है। यह प्रक्रिया शहरों में नहीं होती है। आँचलिक वर्णन याने अनदेखे या

अनोखी जगह का जैसे थे वर्णन। आधुनिकता का तत्त्व अंचल में सम्मिलित है, लेकिन वह ग्रामों से ज्यादा शहरों से जुड़ा हुआ मिलता है। डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त का कहना है -

''आँचलिक जीवन मुख्यत: ग्रामीण ही होता है और आँचलिक उपन्यास इस स्थानिक यथार्थ की सघनता एवं समग्रता के साथ अनुभव की प्रामाणिकता को लेकर प्रस्तुत हुए हैं।''[17]

अधिकतर रूप में भौगोलिक वातावरण और संस्कृति शहरों में नहीं होती। शहर में रहनेवाले विशिष्ट वर्ग एवं समाज के लोगों में आँचलिकता हो सकती है। उनके मन की भावनाओं को यांत्रिकता के आघात कभी छूते नहीं है। इसी कारण उनकी भौगोलिकता आज भी सुरक्षित लगती है। नागार्जुन, फणिश्वरनाथ रेणु, रांगेय राघव, रामदरश मिश्र, तथा भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों की आँचलिकता विशेष रूप से ग्रामांचल में ही आती हैं। शहरी अंचल को सभ्यता कहना उचित होगा, लेकिन सभ्यता के लिए भी संस्कृति का होना अत्यावश्यक है। ग्रामीण अंचल में सत्यता, स्वाभाविकता, नैसर्गिकता तथा जीवन-प्रणाली का वर्णन होता है। जो शहरी अंचल में निहित नहीं होता। ग्रामीण आँचलिकता पर प्राचीनता का आरोप होता है, लेकिन उसमें शहरों जैसी नवीनता और औपचारिकता नहीं होती। डॉ.जवाहर सिंह कहते हैं -

''शहरी अंचल की कथाभूमि बनाकर सही अर्थों में आँचलिक उपन्यास नहीं लिखा जा सकता। अगर ऐसे प्रयत्न हुए हैं तो उनमें आँचलिकता ऊपर से चिपकाई हुई साफ-साफ दीख गई है। ऐसे उपन्यास आँचलिक नहीं होते।''[18]

ग्रामीण जीवन में अंधविश्वासी, अज्ञानी, पीड़ित, पीछड़े हुए, असभ्य, स्वार्थी, संघर्षी लोगों की भरमार होती है। इसी वजह से उसमें प्राणशक्ति अधिक मात्रा में होने के कारण वह रचना सफलता की ओर बढ़ती है। इसलिए शहरी अंचल से ज्यादा ग्रामांचल की कृतियाँ सफल होती हैं। शहरी जीवन से अधिक स्वच्छंद और सशक्त जीवन ग्रामीण का होता है।

ग्राम जीवन में ज्वलंत समस्या, जीवन संघर्ष, परंपरा, मूल्य, अंतर्विरोध के संदर्भ में चित्रण सजीव मिलता है। इसी कारण लेखकों की दृष्टि से परिवर्तनशीलता तथा प्रामाणिकता अनिवार्य बनती है। शोषण, दंगे-फसाद, कुव्यवस्था, नैतिक मान्यता, महँगाई, शासन की दुर्लक्षिता आदि बातों की भरमार ग्रामीण अंचल में होती है। इसी कारण अनेक प्रयासों के बाद भी शहरी अंचलों से ज्यादा ग्रामांचल वर्णन को

सफलता प्राप्त होती है क्योंकि उसकी मानसिकता का गठन खास माहौल में पनपता है।

2.5 आँचलिक उपन्यास : उद्भव और विकास :-

हिंदी में आँचलिक साहित्य का उद्भव कब और कैसे हुआ? इसके बारें में विद्वानों में एकमत नहीं हैं। तथा हिंदी का पहला आँचलिक उपन्यास कौनसा? यह भी एक प्रश्न उठता है। कई विद्वान शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' से हिंदी के आँचलिक उपन्यास का आरंभ मानते हैं। इसी प्रथम कृति की रचना का काल सन् 1925 ई. है। डॉ.गोपालराय 'देवरानी जिठानी की कहानी' इस उपन्यास को पहला आँचलिक उपन्यास मानते हैं, जिसके रचनाकार पं.गौरीदत्त हैं। इसके बाद डॉ.बदरीदास, डॉ.मन्मन द्विवेदी के 'रामलाल' उपन्यास से आँचलिकता का उद्भव मानते हैं। उनका कहना है कि -

''आँचलिक उपन्यासों का प्रारंभ भारतेंदु काल में ही हो चुका था। उसकी कोई सुनिश्चित परंपरा निर्मिति नहीं हुई परंतु स्वाभाविक विकास होता गया। उसका मूल आकर्षण स्थानीय रंग है, जो कई उपन्यासों में उभरकर आता रहा। स्थानीय रंग के उपन्यास आँचलिक उपन्यास का पूर्वरूप प्रस्तुत करते हैं।''[19]

अत: आँचलिक उपन्यास के उद्भव के प्रति अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी राय प्रकट की है जिससे आँचलिक साहित्य के उद्भव का पता लगाना कठिन होता है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में आँचलिक उपन्यास लिखे गए थे लेकिन उनमें आँचलिक तत्त्व तथा प्रवृत्ति का अभाव होने के कारण आँचलिक कृतियाँ मानना ठीक नहीं हैं। वे उपन्यास सिर्फ आँचलिकता का आभासमात्र थे। कई आलोचक या समीक्षकों ने फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' को हिंदी की पहली आँचलिक कृति मानी है। रेणुजी ने अपने उपन्यास के नाम में ही 'आँचल' शब्द का प्रयोग किया है। मैला आँचल शीर्षक के नीचे उन्होंने 'आँचलिक उपन्यास' लिखा था। इसी कारण आँचलिकता को लेकर बहस होने लगी और आँचलिकता का सार्थक रूप सामने आया।

आँचलिक तत्त्वों से परिपूर्ण रेणु जी की कृति ही प्रथम आँचलिक कृति मानी गयी। रेणु जी के बाद अनेक उपन्यासकारों ने आँचलिक साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसमें हैं - रांगेय राघव, प्रेमचंद, नागार्जुन, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र, उदयशंकर भट्ट, भैरवप्रसाद गुप्त, राजेंद्र अवस्थी आदि

'अंचल' शब्द को सही मायने में अर्थपूर्ण योगदान देनेवाले अनेक उपन्यासकार रहे हैं जिन्होंने आँचलिकता को अपने-अपने ढंग से, अंचल प्रदेश के रूप में ही ऊपर उठाया है। उन्होंने जन सामान्य की समझ में आनेवाली भाषाओं में आँचलिकता को उजागर करने का प्रयत्न किया।

अंचल प्रदेश की रहन-सहन, भाषा, पेहराव, बोलियाँ, द्वेष, कलह, शोषण, नारी जीवन, राजनीति, समाजवादी दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, तथा विभिन्न समस्याओं को सामने रखकर आँचलिकता को स्पष्ट किया जाने लगा। अंचल का गहराई से अध्ययन इनका प्रमुख कर्तव्य रहा है। अंचल प्रदेश की लोकोक्तियाँ, मुहावरें, लोकगीत, लोकजीवन, उत्सव-त्यौहार आदि बातों को सामने रखकर रचनाओं का निर्माण होने लगा। उन्होंने अंचल की गंध तक को भी छोड़ा नहीं। उनके प्रयास से कृत्रिमता दूर होने लगी। धार्मिक संघर्ष, नैतिक अध:पतन तथा आर्थिक कोलाहल के बीच पनपनेवाले साहित्य को छुड़ाकर उसे स्वतंत्रता का रूप दिया और स्वतंत्र अंचल की आँचलिकता का निर्माण होता रहा।

स्पष्ट होता है कि आँचलिक उपन्यास अधिकतम रूप में स्वातंत्र्योत्तर काल में लिखे गए हैं। हिंदी उपन्यास में आँचलिकता विशुद्ध रूप से स्वातंत्र्योत्तर युग की देन है। प्रेमचंद के प्रवेश से इस आँचलिक साहित्य में काफी प्रभाव पड़ा और उसने परिवर्तन की सीमा लाँघ दी। प्रेमचंद ने उसे नया मोड़ दिया। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव अंचल पर पड़ गया और उसने अपना प्रभाव साहित्य में दिखाना शुरू कर दिया। लोकगीतों, मुहावरों, लोकोक्तियों, रहन-सहन, पहचान, परंपरा, अंधविश्वास आदि का चित्रण स्पष्ट रूप से, अलग-अलग ढंग से अलग-अलग रूप में होने के साथ-साथ उसमें बोलियों को भी सम्मीलित कर दिया। सन् 1948 ई.से लेकर सन् 1990 ई. तक का काल आँचलिक अध्ययन का स्वर्णयुग रहा है। उपन्यासों में फणिश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, शिवप्रसाद सिंह ने आँचलिकता का संबंध आधुनिकता से जोड दिया। भगवतीप्रसाद शुक्ल कहते हैं -

''आँचलिकता का आधुनिकता की ओर प्रस्थान और आधुनिकता का आँचलिक को स्वीकार करना हिंदी के लिए शुभ है।''[20]

आँचलिकता का विकास पश्चिम के प्रादेशिक उपन्यासों के साथ बढ़ता रहा। सूरदास के कृष्णभक्ति पदों में आँचलिकता दिखाई देती है। इसका मतलब यह कि आँचलिकता धार्मिक ग्रथों से चलती

आयी है। आजकल आँचलिकता सभी भाषाओं के साहित्य में दिखाई देती है। निष्कर्षतः आँचलिकता का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ है और बहुत सारे विद्वानों तथा रचनाकारों ने आँचलिकता के विकास-हेतु बड़ा योगदान दिया है। यही आँचलिकता वास्तववादी स्वरूप को तथा किसी विशिष्ट प्रदेश की अंचल में छिपी सुंदरता को उजागर करती आ रही है।

2.6 आँचलिक उपन्यास : परिभाषा :-

'अंचल' शब्द को सही मायने में अर्थपूर्ण योगदान देनेवाले अनेक आँचलिक उपन्यासकार रहे हैं। जिन्होंने आँचलिकता को अपने-अपने ढंग से, अंचल प्रदेश को ऊपर उठाया है। वैसे देखा जाए तो उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंचल को पाठकों के सामने अपनी कल्पनाशक्ति से, स्पष्ट रूप से तथा जनसामान्य की समझ में आनेवाली भाषाओं में उजागर किया है। विद्वजनों की आँचलिक उपन्यास की परिभाषाएँ निम्न है -

(1) <u>डॉ.रामदरश मिश्र</u> -

''आँचलिक उपन्यास लिखना मानों हृदय में किसी प्रदेश की कसमसाती हुई जीवनानुभूति को वाणी देने का अनिवार्य प्रयास है। आँचलिक उपन्यास अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है, उसका संबंध जनपद से होता है, ऐसा नहीं वह जनपद की ही कथा है।''[21]

(2) <u>हिंदी साहित्य कोश - भाग - एक</u> -

''कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथा-तथ्य और बिंबात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है, तो उन्हें प्रादेशिक या आँचलिक उपन्यास कहा जाता है।''[22]

(3) डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त -

''आँचलिक उपन्यास उन उपन्यासों को कहते हैं, जिनमें एक विशेष - अंचल के निवासियों का जीवन अपने समग्र रूप में विस्तार के साथ चित्रित होता है।''[23]

(4) डॉ.इंदिरा जोशी -

''आँचलिक उपन्यास किसी भी विशिष्ट भाग अथवा प्रदेश विशेष को केंद्र बनाकर लिखा जाता है, जिसमें जन-जीवन का चित्रण किया जाता है।''[24]

(5) डॉ.सुमित्रा त्यागी -

''लोकजीवन और लोकसंस्कृति द्वारा अंचल के जीवन दर्शन को चित्रित करनेवाला उपन्यास आँचलिक उपन्यास है।''[25]

(6) डॉ.ह.के.कडवे -

''किसी अंचल विशेष की समग्र सांस्कृतिक लोकजीवन की गतिशीलता एवं मानवी चेतना का संवेदनापूर्ण चित्रण ही आँचलिक उपन्यास है।''[26]

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, आँचलिक उपन्यासों में संस्कृति तथा गतिशील जीवन के द्वारा वहाँ की स्थिति का यथावत वर्णन किया जाता है। अत: हम देखते हैं कि विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। उसमें कोई जनपद को महत्त्व देता है, तो कोई सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रति अनुभूति दिखाता है। कोई अपरिचित भूमी, विशिष्ट भाग, विशिष्ट प्रदेश को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। इससे स्पष्ट होता है कि इन विद्वानों ने अंचल प्रदेश की रहन-सहन, भाषा, पेहराव, बोली, द्वेष, कलह, शोषण, नारी-जीवन, राजनीति, समाजवादी दृष्टिकोण, मनोविज्ञान आदि बातों को सामने रखकर आँचलिकता को स्पष्ट किया है। अंचल में स्थित अनेक रूपों पर इन्होंने अपना ध्यान केंद्रित किया है। इनके समवादी दृष्टिकोण से तथा अंचल समीक्षा से हिंदी आँचलिक क्षेत्र गौरवान्वित हुआ है।

निष्कर्षतः किसी विशिष्ट भू-प्रदेश की विशिष्ट लोकसंस्कृति, जीवन, बोली भाषा, रहन-सहन, समस्या, ग्रामीण वातावरण, अज्ञात जाति, राजनीतिक, सामाजिक और मानवी चेतना का, संवेदना और गंभीर अनुभूति से समग्र विस्तार चित्रण जिस उपन्यास में मिलता है, उसे आँचलिक उपन्यास कहना उचित होगा।

2.7 आँचलिक उपन्यास : स्वरूप :-

आँचलिक रचना कैसी भी हो लेकिन उसका एक वैशिष्ट्य कायम रहता है आम जनता की बातों को सामने लाना। आम जनता ज्यादह तौर पर ग्रामों में ही मिलती है, इसी कारण ग्रामांचल श्रेष्ठ है। शहरी सभ्यता का ग्रामीण संस्कृति पर प्रभाव पड़ता रहा है लेकिन उसमें बहुत सारे परिवर्तनों के बावजूद भी, थोडी ईमानदारी आज का वर्तमान काल है। आँचलिक उपन्यास की गति एक दिशा में न होकर चारों दिशाओं में होती है। आँचलिक उपन्यास का अपना शिल्प-गठन होता है। उसकी अपनी सर्जन प्रक्रिया होती है। जीवन के रसग्रहण की कसौटी पर आँचलिक उपन्यासों की परख की जाती है। आँचलिकता के स्वरूप के बारे में डॉ. रामदरश मिश्र और डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त लिखते हैं -

''किसी विशेष अंचल के लोकजीवन सहित उसकी आस्थाभाषा, कलारूचि, रूढियाँ, गीतनृत्य और तमाम-तमाम अतीत मुखी सांस्कृतिक बुनावटों को कोई कथाकार तरल राग बोध के स्तर पर सोद्देश्य डालना चाहता है तो उससे मूल्यवान आँचलिक कथा-साहित्य का सृजन होता है।''[27]

आँचलिकता प्रादेशिक अखंडता या राष्ट्रीय एकता के विरूद्ध नहीं है क्योंकि ''आँचलिक उपन्यास अपने स्थानीय रंग, रीति-रिवाज, वातावरण, संस्कृति व भाषा के माध्यम से यथार्थ को उकेरता है।''[28] इनमें पात्रों की भरमार होती है। कथावस्तु में सुसूत्रता न होकर बिखराव मिलता है। कथानक के बिखराव के कारण आँचलिक उपन्यास सफलता की ओर बढ़ता है। इन उपन्यासों का नायक अंचल ही होता है। इसमें पात्रों की परिवर्तित मनस्थितियाँ तथा व्यक्ति की अपेक्षा समाज चित्रण महत्त्वपूर्ण होता है। आँचलिक शब्दों तथा अपशब्दों के कारण पहली बार पढ़ते समय कठिनाइयाँ महसूस होती हैं। स्वरूप के बारे में लिखना हो तो डॉ.चंद्रशेखर कर्ण का कहना सामने रखना उचित होगा। उनके मतानुसार -

''आँचलिक रचना वह है, जिसमें किसी अंचल या जनपद या क्षेत्र के जनजीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण किया जाता है, किसी कृति में उस अंचल विशेष का जन-जीवन, भाषा, वेश-भूषा, आचार-विचार, जीवन और संघर्ष, सामाजिक समस्याएँ, आस्थाएँ और मान्यताएँ चित्रित की जाती हैं।''[29]

आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ निम्न हैं -

(1) समाज चित्रण।

(2) अज्ञानी, धार्मिक, अंधविश्वासी और परंपरा प्रिय समाज का वर्णन।

(3) विवाह प्रकारों का चित्रण।

(4) जीवन व्यापार चित्रण।

(5) कौतूहल तथा आश्चर्य की भावना का वर्णन।

(6) सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले पात्रों का वर्णन।

(7) पात्रों का चित्रण।

(8) पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का वर्णन।

(9) विविध समस्याओं का चित्रण।

(10) शोषण, अत्याचार एवं राजनीतिकता पर दृष्टि।

(11) वर्णन शैली।

(12) संस्कृति तथा सौंदर्यात्मक दृष्टि।

(13) छोटे-छोटे संवाद तथा स्थानीय कहावतें, मुहावरें, लोकोक्ति और गालियों का प्रयोग।

(14) स्थानीय बोली का प्रयोग।

(15) युगीन चेतना की अभिव्यक्ति आदि विशेषताओं को लेकर आँचलिक उपन्यासों की निर्मिति होती हैं।

2.8 आँचलिकता का महत्त्व :-

'आँचलिकता' यह संस्कृत के 'अंचल' शब्द को 'ईक' प्रत्यय लगाकर बना भाववाचक शब्द है। 'आँचलिकता' उपन्यासों की एक स्वतंत्र विधा और महत्त्वपूर्ण प्रवाह है। इसमें नए-नए आयाम और

प्रकारों के कारण उनका महत्त्व बढ़ता गया। आँचलिक वर्णन से जीवनदर्शन होने लगा। डॉ.रामदरश मिश्र कहते हैं कि -

''आँचलिक उपन्यासों ने अनुभवहीन सामान्य या विराट के पीछे न दौड़कर अनुभव की सीमा में आनेवाले अंचल विशेष को उपन्यास का क्षेत्र बनाया है।''[30]

आँचलिकता की विषयवस्तु अंचल-विशेष के समग्र जीवन से संबंधित होती है। समग्र रूपात्मक जीवन को चित्रित करना आँचलिकता का ध्येय होता है। कथा में विविधता दृष्टिगोचर होती है। यह एक क्षेत्र विशेष की कथा होती है जहाँ अज्ञान, अज्ञात, अंधविश्वास और रूढ़िग्रस्त जीवन का वर्णन होता है। अनदेखें, अज्ञात प्रदेश का खुलेआम चित्रण आँचलिकता में होता है। इसी कारण शहरी सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता को परिचित कराना 'आँचलिकता' का ध्येय होता है। समाज में पिछड़े हुए लोगों का सजीव वर्णन इसमें मिलता है। उनकी समस्याएँ, रहन-सहन, बोली, संस्कृति, व्यवहार आदि के चित्रण के कारण पाठक उसे अच्छी तरह समझ सकते हैं। सरकारी अफसरों द्वारा होनेवाले अन्याय, अत्याचार तथा सरकार से मिलनेवाली मदद बीच में ही कैसे गायब होती है? इसका सीधा चित्र आँचलिकता में उभरता है। नारी जीवन की समस्या, अंतर्विरोध, स्वतंत्र व्यक्तित्व जीनेवाले लोग आदि बातें लेखक अपनी दृष्टि से लिखता है। आँचलिकता में सत्यता होती है। समाज जीवन का हू-ब-हू वर्णन उसमें मिलता है, क्योंकि -

''आँचलिक उपन्यासकार अंचल के पात्रों, वहाँ की समस्याओं, वहाँ के संबंधों, वहाँ के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के समग्र रूपों, परंपराओं और प्रगतियों को अंकित कर सकता है क्योंकि उसने उन्हें अनुभूति में उतारा होता है।''[31]

जीवन के अभिनव रूप आँचलिक कृतियों में देखने को मिलते हैं। आँचलिक भाषा में स्थानीय रंग की गहनता होती है। इसमें अशिक्षित वर्ग का चित्रण मिलता है।

''आँचलिक उपन्यासकार जीवन की बाहर-भीतर के संपूर्ण सामंजस्य देखना चाहता है। देहाती अंचल, वन्य अंचल, पहाड़ी अंचल आदि में जीवन और प्रकृति का गहरा संबंध दिखाई देता है।''[32]

आँचलिक शैली आधुनिक उपन्यास की नवीन शैलियों में उल्लेखनीय है। आँचलिक

उपन्यासों में भावात्मक तथा विवरणात्मक शैली का बहुलता से प्रयोग उपलब्ध होता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि वातावरणों का वर्णन विशेषता से प्रस्तुत आँचलिकता में होता है। ऐसी कृतियों में आत्मीयता का भाव होता है और वह वर्तमान जीवन की विविध समस्याओं के प्रति उपन्यासकार के दृष्टिकोण को व्यक्त करती है। भौतिक सभ्यता की विकृतियों को उद्घाटित करने का महत्त्वपूर्ण काम आँचलिकता करती है। देहाती तथा पिछड़े समाज का 'एक्स-रे' आँचलिकता है। ब्याह, श्राद्ध, उत्सव, शोक, झगड़े, गति, जीवन के प्रत्येक व्यापार का चित्रण उसमें होता है। किसानों का शोषण, दरिद्रतापूर्ण स्थिति, आपसी ईर्षा, द्वेष, कलह, स्वार्थी प्रवृत्ति का वर्णन इसमें मिलता है। आस्थावादी और सामंतवादी जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति के साथ-साथ ऐसी कृतियों में व्यक्तियों के नैतिक मूल्य अस्थिर है और वह तीव्र शोषण से ग्रस्त एवं पीड़ित है। अत: उनका चित्रण परिलक्षित होता है। इसी कारण आँचलिकता महत्त्वपूर्ण है।

2.9 आँचलिक उपन्यासों में चित्रित विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन :-

आँचलिक उपन्यासों में विभिन्न परिस्थितियों का अंकन होता है। उपन्यासों में आँचलिक स्थितियों का वर्णन करते समय ग्राम-जीवन का अधिकतम रूप सामने आता है क्योंकि ग्राम-जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को बड़ी निकटता से उपन्यासों में परिलक्षित करना होता है। ग्रामों में उनका स्पष्ट रूप दिखाई देता है। अनेक साहित्यिक रचनाओं में शहरी अंचलों से ज्यादा ग्रामांचल का परिवेश उभर आया है। आँचलिकता में बहुत सारी बातों की भरमार होती है। इसी कारण समाज के परिप्रेक्ष्य में आयी आँचलिक उपन्यासों में चित्रित स्थितियों का वर्णन निम्नप्रकार से होना स्वाभाविक है -

2.9.1 राजनीतिक परिस्थिति -

राजनीतिक स्थिति वर्णन के बिना आँचलिक उपन्यास असफल है। समाज में घटित घटनाओं का अनुशीलन राजनीति द्वारा उभर आता है। पुलिस, नेतागण तथा पेशकार, पटवारी द्वारा निम्नवर्गियों का शोषण होता रहता है तथा उन पर होनेवाले अत्याचारों को उन्हें चूपचाप सहना पड़ता है। इसी कारण राजनीति का प्रभाव साहित्य को अधिक ऊँचे स्तर पर ले जाता है। सरकारी अफसर तथा गाँव के जमींदार निम्न तथा मध्यवर्गियों से किसी काम हेतु रिश्वत लेते हैं। क्षणभर की प्रसन्नता उन्हें जिंदगीभर विवश करती है। उन्हें मिलनेवाली सरकारी मदद बीच में ही गायब हो जाती है। धन के अभाव के कारण राजनीति बिगड़ती है और कुप्रभाव के कारण भी। इसमें राजनीति षड़यंत्र का साम्राज्य रहता है।

13589

कई लोग सामंतवादी तत्वों को आश्रय देते हैं। इससे नैतिक मूल्यों की गिरावट होती है। जो सच्चा प्रतिनिधि होता है उसे भ्रष्ट कहकर समाज उसे हराने की कोशिश में लगा रहता है। बहुमत के कारण सच्चे प्रतिनिधि की हार होती है। राजनीतिक परिस्थिति के माहौल में अवसरवादी विचारों को प्रोत्साहन मिलता है। स्वार्थ की भावना बहुत तेज गति से पनपती है। राजनीतिक स्थिति के कारण शिक्षा संस्थाओं की कमी ऐसे विभाग में महसूस होती है। इसी कारण राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण होना स्वाभाविक है।

2.9.2 सामाजिक परिस्थिति -

समाज में अनेक घटनाएँ होती रहती हैं। उनका मेल जमाना कोई संभव बात नहीं है। ये कार्य आँचलिक उपन्यासकार करता है। समाज में अनेक जाँति-पाँति के लोग रहते हैं। उनमें उच्च जातिवाले मध्य तथा निम्नवर्गियों को अपना गुलाम समझते हैं, जैसे कि जमींदार अपना रोब मजदूरों पर जमाता है। अनेकों से बना समाज संघर्ष तथा अंतर्विरोध के कारण खोखला बनता है और वही अंतर्विरोध और संघर्ष सामाजिक वातावरण के लिए शाप बनते हैं।

''समाज के भीतर वर्ग और वर्ग का संघर्ष, फिर वर्ग के भीतर कुल और कुल का, कुल में परिवार और परिवार का, परिवार के भीतर व्यक्ति और व्यक्ति का संघर्ष - इन सब पर टिककर उपन्यासकार की दृष्टि विकसित होती रही, जिससे उपन्यास में सामाजिक वस्तुओं का अनुपात बढ़ता गया।''[33]

समाज में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। उनपर शहरी अंचल का प्रभाव पड़ जाता है। इसी कारण ग्रामांचल के लोग प्राचीनता को भूलकर शहरों में आये परिवर्तन की ओर झुक जाते हैं। भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान होने के कारण नारी का स्थान दूसरा रहता है। इसी कारण नारी जीवन का चित्रण सामाजिक स्थिति के अंतर्गत आता है। ग्रामीण समाज के युवक परंपरा से पीड़ित या रूढ़िवादी रहते हैं। आँचलिक उपन्यास ही उन्हें नयी चेतना प्रदान कर सकते हैं। समाज में कुछ बंधन अति आवश्यक है, अन्यथा सामाजिक अराजकता मानव जीवन को असभ्यता के पाशविक अंधकार में ढाल सकती है। सुभाषिनी शर्मा के अनुसार -

''आँचलिक उपन्यासों की सर्वप्रमुख विशेषता है - किसी समाज के जन-जीवन का विविध रूपात्मक चित्र उपस्थित करना।''[34]

2.9.3 धार्मिक परिस्थिति -

पारंपारिक विचारधाराओं के साथ चलनेवाले लोगों की श्रद्धा अंधविश्वास पर टिकी रहती है। वे समाज में घटित घटनाओं को ईश्वर की लीला समझते हैं। आज की स्थिति में विज्ञान एक ओर अपनी खाँसियत से ऊपर उठ रहा है और ग्रामों में एक ओर अंधविश्वास की बलियाँ चढ़ती जा रही हैं। अंधविश्वास के कारण धर्म व्यापक एवं दृढ़ बनता है। ऐसी उनकी धारणा होती है। धार्मिकता के अंचल में पलनेवाले समाज की विचारधारा भी पारंपारिक रूढ़िवादी होती है।

''भारतीय जीवन में धर्म एक आवश्यक सत्ता के रूप में विद्यमान है, यह एक शक्ति एवं विश्वास के रूप में मान्य है। उसके नियम समाज में शाश्वत नियमों की भाँति विद्यमान हैं।''[35]

मराठी विश्वकोश में धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है - ''इष्ट की प्राप्ति के लिए और अनिष्ट के निवारण के लिए अलौकिक शक्ति की की गयी साधना या प्रार्थना ही 'धर्म' कहलाती है।''[36] धर्मांधता से पागल लोग नारी को चार दीवारों में बद करना ही पसंद करते हैं। विधवाओं का पुनर्विवाह पाप समझा जाता है। धर्म के नाम पर अंचल में बिगाड़ आता रहता है। इसी कारण ''धर्म आँचलिक उपन्यास क्षेत्र विशेष का समग्ररूपात्मक अंकन करने में विशेष रूप से सहाय्यक होते हैं।''[37]

ग्रामीण अंचल में अनेक देवी-देवताओं का पूजन होता है। धार्मिक अंचल पिछड़े समाज की संकुचित वृत्ति का द्योत्तक है। आँचलिक उपन्यासकारों ने अंचल वर्णन में धार्मिक संस्कृति या स्थितियों को सामने रखकर अनेक देवी-देवताओं का वर्णन किया है, लेकिन उनका भी एक विशेष स्थान रहा है।

2.9.4 आर्थिक परिस्थिति -

अधिकतम रूप में ग्रामीण विभाग में बेकारी की समस्या होती है। लोगों को मजदूरी मिलती है लेकिन उन्हें तन्ख्वाह के रूप में बहुत कम पैसे मिलते हैं। समाज में उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग के लोग रहते हैं। उच्च और मध्यवर्गियों द्वारा निम्न जाति के लोगों का शोषण होता रहता है। धन की लेन-देन हेतु उनकी इज्जत भी लूट लेना वे अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। जमींदार, ठेकेदार, साहुकार लोग अज्ञान और अंधविश्वासी ग्रामांचल का फायदा उठातें हैं। हर दिशा से उनका शोषण होता है। समाज में प्रतिष्ठित समझनेवाले डॉक्टर

और सरकारी अफसर भी इस भ्रष्ट नीति में सम्मिलित हैं। वर्ग-वैषम्य के कारण रहन-सहन में अंतर आता है। शोषण और अत्याचार की सीमा को पार कर पीड़ितों को आगे चलना पड़ता है। उच्चवर्गीय, निम्नवर्गियों को मिलनेवाली मजदूरी में भी भ्रष्टाचार करते हैं। गरीब तथा निम्नवर्गीय अन्नाभाव के कारण दो वक्त की रोटी के लिए उच्चवर्गियों की मनमानी को चूपचाप सहन लेते हैं। कृषक और श्रमिकों को भी आर्थिक स्थिति से गुजरना पड़ता है। ग्रामांचल पर शहरी प्रभाव दिखाई देता है। मँहगाई, बेकारी के कारण उनकी स्थिति दयनीय होती है। ऐसी आर्थिकता का वर्णन आँचलिक उपन्यास में वास्तव रूप में दिखाई देता है।

2.9.5 सांस्कृतिक परिस्थिति -

आँचलिक उपन्यासों की सांस्कृतिक स्थितियों में त्यौहार, लोकगीत, लोकजीवन, लोककथाएँ, मेले, अंधविश्वास, प्राचीन और नवीन संस्कृति में अंतर, नारी शिक्षा आदि बातें देखने को मिलती हैं। प्राचीन और नवीन संस्कृति में काफी अंतर आया है। आँचलिक उपन्यासों में संस्कृति को बड़ा व्यापक महत्त्व है। संस्कृति का अपना विशेष स्थान अंचल में अंकित होता है।

''भारतीय संस्कृति का मूल एंव वास्तविक रूप ग्राम जीवन में ही उपलब्ध होता है। संस्कृति वह आधार है, जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान, कला, नैतिकता, प्रथा परंपराएँ आदि के संबंध में सीखता है।''38

प्राचीन संस्कृति के दर्शन ज्यादह तौर पर ग्रामों में ही होते हैं। अंचलवासी पारंपारिक नृत्यों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक कला को प्रकट करते हैं। सांस्कृतिक परिस्थिति को लेकर राजकुमारी सिंहजी का कहना है -

''भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक पर्वों, त्यौहारों का अपना विशेष स्थान है। इसमें लौकिक एवं पारलौकिक दोनों रूप से जीवन को हर्ष, उल्हासमय बनाने की सात्विक भावना विद्यमान रहती है। संस्कृति का मनुष्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने पूर्व समाज से हस्तांतरीत करता आ रहा है, वस्तुत: आँचलिक संस्कृति के पर्व, त्यौहार, मेले, कलाएँ, प्रथाएँ, रूढ़ियाँ एवं विविध संस्कारबद्ध परंपराएँ इसके प्रधान तत्त्व है।''39

2.9.6 मनोवैज्ञानिक परिस्थिति -

आधुनिक युग मानव मन-विश्लेषण का युग रहा है। ऐसी स्थिति में अर्थाभाव की कई समस्याओं के कारण व्यक्ति अपराध पर अपराध करता रहता है। मन वितृष्णा से भर आता है। नारी मन की कुण्ठाओं का वर्णन मनोवैज्ञानिक अंचल उपन्यासों में प्राय: होता रहता है।

''मनोविज्ञान का समावेश उपन्यासों के क्षेत्र में प्रेमचंद युग से ही प्रारंभ हो गया था, परंतु समीक्षकों ने प्रेमचंद के मनोवैज्ञानिक चित्रण को महत्त्वपूर्ण न मानकर सामाजिक यथार्थ को उल्लेखनीय घोषित किया।''[40]

सामाजिक यौन विकृतियाँ एवं विसंगतियों का चित्रण आँचलिक उपन्यासों में मिलता है। अनेक समस्याओं के बीच दम तोड़नेवाला समाज और उनकी संवेदना का वर्णन आँचलिक उपन्यासकार करते हैं। पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का भी वर्णन मिलता है। ''मनोवैज्ञानिक चित्रण से अवचेतन की अपेक्षा चेतन के स्वरूप को प्रधानता दी जाती है।''[41] भ्रष्टाचार, दुर्व्यसन, दुराचार, नैतिकता आदि का भी समावेश इसमें होता है। बालविवाह, यौन समस्या, वासनापूर्ति के लिए पागलों जैसी स्थिति आदि का वर्णन मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया जाता है।

''आँचलिक उपन्यासों में असंख्य ऐसे स्थल मिलते हैं जो लेखकों की मनोवैज्ञानिक दृष्टि की सूक्ष्मता के द्योत्तक हैं।''[42]

मनोवैज्ञानिक वर्णन करते समय अंचल में स्थित पात्रों के अंतर्मनों को जानना आवश्यक होता है, जिससे उपन्यास सफलता की ओर बढ़ता है।

निष्कर्ष -

कोशकार अंचल के अर्थ-पार्श्ववर्ती प्रदेश, वस्त्र का छोर, आँचल, पल्लू, सिरा, आँचला, किनारा, तट, तलहटी, घाटी, दुपट्टा, उपरना, ओढ़नी, देश या प्रांत का एक भाग, सीमा के आसपास का प्रदेश बताते हैं, तो विद्वान एक विशेष भाग, सीमित भू-प्रदेश, जन-जीवन, अन्य भू-भाग से भिन्न-भू-भाग,

प्रदेश विशेष, ग्राम जीवन, जीवन और प्रवृत्ति का गहरा संबंध, सांस्कृतिक या भौगोलिक क्षेत्र आदि महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसी कारण अंचल की परिभाषाएँ विद्वानों से ज्यादा कोशकारों की विस्तृत लगती है। साहित्यिक रचना की दृष्टि से विद्वानो की परिभाषाएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

अंचल का निर्माण स्वत: होता है। उसकी अपनी-अपनी सीमाएँ होती हैं। अंचल का समाज बिखरा हुआ मिलता है, लेकिन उसकी सांस्कृतिक स्थिति, लोक व्यवहार, लोकगीत, विवाह पद्धति, माँगलिक अवसरों के गीत, ग्रामदेवता, कुलदेवता, त्यौहार, लोककथाएँ, संपूर्ण जीवन-व्यवस्था एक होती है। स्थान विशेषताओं के कारण अंचल के प्रकार किए गए हैं। उनमें पहाड़ी जन-जीवन, ग्राम, सागर, कमाऊ, बंजरभूमि, वन्यभूमि अंचल आदि आते हैं। ऐसी आँचलिक स्थितियों का वर्णन कोई सफल आँचलिक उपन्यासकार ही कर सकता है। अंचल को अधिकतम रूप में भौगोलिक सीमित अज्ञात प्रदेश कहना अच्छा होगा, जिसकी अपनी भाषा और विशिष्ट संस्कृति होती है। आँचलिक कृतियों के कारण उसी क्षेत्र की प्राचीन मान्यताएँ, रूढ़ि, आचार-विचार, रहन-सहन, लोकसंस्कृति, परंपराएँ, सामाजिक परिवेश, उनकी विशेषताएँ, जातीयता, प्रकृति, भौगोलिक स्थान आदि जानकारी मिलती है।

आजकल आँचलिक साहित्य का प्रभाव सभी भाषाओं पर देखने मिलता है। आँचलिकता का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ है। फणीश्वरनाथ रेणु जी का 'मैला आँचल' उपन्यास पहली आँचलिक कृति मानी जानी चाहिए। हिंदी साहित्य में अनेक विद्वानों ने आँचलिकता के विकास हेतु बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने अपने-अपने ढंग से आँचलिक उपन्यासों की परिभाषाएँ दी हैं। अलग-अलग बातों को महत्त्व दिया है। वास्तविक रूप से किसी विशिष्ट भू-प्रदेश की विशिष्ट लोकसंस्कृति, जीवन, भाषा, बोली, रहन-सहन, समस्याएँ, ग्रामीण वातावरण, अज्ञात जाति, राजनीतिक, सामाजिक और मानवी चेतना का, संवेदना और गंभीर अनुभूति से समग्र विस्तार चित्रण जिस उपन्यास में मिलता है उसे आँचलिक उपन्यास कहना उचित होगा। आँचलिक उपन्यासों में विश्वव्यापी सत्यम् , शिवम् , सुंदरम् को पनाह देनेवाला वर्णन मिलता है।

आँचलिक उपन्यास में आस्थावादी और सामंतवादी जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति के साथ व्यक्तियों के नैतिक मूल्य अस्थिर हैं और वह तीव्र शोषण से किस तरह से ग्रस्त एवं पीड़ित हैं, उनका चित्रण परिलक्षित होता है। इसी कारण आँचलिकता महत्त्वपूर्ण हैं। जब तक शहरी और ग्रामांचल की श्रेष्ठता का

प्रश्न हल नहीं होता तब तक किसी एक को श्रेष्ठ मानना उचित नहीं होगा लेकिन ग्रामांचल की कृतियाँ सफल होती दिखाई देने के कारण ग्रामांचल उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं। शहरों से ज्यादा पारिवारिक संबंध ग्रामांचल में दिखाई देते हैं। इसी कारण उनके सुख-दुख का बँटवारा हो जाता है। इसीलिए ग्रामांचल श्रेष्ठ मानना उचित है। अंचल की विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन करना उपन्यासकारों को अनिवार्य होता है। उन परिस्थितियों के कारण ही अंचल का निर्माण होता है। उनमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का समावेश किया जाता है।

: संदर्भ-संकेत :

(1) संपा.डॉ.जयशंकर जोशी - हलायुध कोश - पृ. 111.

(2) संपा.डॉ.श्यामसुंदरदास - हिंदी-शब्दसागर - पृ. 12-13.

(3) संपा.डॉ.गोविंद चातक - आधुनिक हिंदी शब्दकोश - पृ. 11.

(4) संपा.डॉ.हरदेव बाहरी - राजपाल हिंदी शब्दकोश - पृ.3.

(5) संपा.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश - पृ.9

(6) डॉ.ह.के.कडवे - हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति - पृ.18.

(7) शंभूसिंह - रांगेय राघव और आँचलिक *उपन्यास* - पृ.11.

(8) डॉ.उषा डोगरा - हिंदी के आँचलिक उपन्यासों का लोकतात्विक विमर्श - पृ.79.

(9) डॉ.रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - पृ.188-189.

(10) डॉ.राजकुमारी सिंह - हिंदी और अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - पृ.62.

(11) डॉ.चंद्रेश्वर कर्ण - आँचलिक हिंदी कहानी - पृ.12.

(12) डॉ.राजकुमारी सिंह - हिंदी तथा अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन - पृ.18.

(13) डॉ.जवाहर सिंह - हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि - पृ.50.

(14) डॉ.आदर्श सक्सेना - हिंदी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि - पृ.105.

(15) डॉ.ह.के.कडवे - हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति - पृ.66.

(16) वहीं,

(17) डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त - आँचलिक उपन्यास : संवेदना और शिल्प - पृ.13.

(18) डॉ.जवाहर सिंह - हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि - पृ.63.

(19) डॉ.बदरीदास - हिंदी उपन्यास : पृष्ठभूमि और परंपरा - पृ.369.

(20) डॉ.भगवतीप्रसाद शुक्ल - आँचलिकता से आधुनिकता बोध - पृ.133.

(21) डॉ.रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - पृ.188.

(22) संपा.डॉ.धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश -भाग-एक - पृ.14.

(23) डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त - आँचलिक उपन्यास : संवेदना और शिल्प - पृ.15.

(24) डॉ.इंदिरा जोशी - हिंदी आँचलिक उपन्यास : उद्‌भव और विकास - पृ.17.

(25) डॉ.सुमित्रा त्यागी - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में जीवनदर्शन - पृ.226.

(26) डॉ.ह.के.कढवे - हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति - पृ.27.

(27) संपा. डॉ.रामदरश मिश्र, डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त - हिंदी के आँचलिक उपन्यास - पृ.18.

(28) डॉ.राजकुमारी सिंह - हिंदी और अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - पृ.7.

(29) डॉ.चंद्रेश्वर कर्ण - आँचलिक हिंदी कहानी - पृ.13.

(30) डॉ.रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - पृ.187.

(31) संपा.डॉ.रामदरश मिश्र, डॉ.ज्ञानचंद्र गुप्त - हिंदी के आँचलिक उपन्यास - पृ.9.

(32) डॉ.रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - पृ.188-189.

(33) डॉ.विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य - पृ.82.

(34) डॉ. सुभाषिनी शर्मा - स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास - पृ.46.

(35) वहीं, पृ.60.

(36) संपा.तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी - मराठी विश्वकोश खण्ड - 8 - पृ.17.

''इष्टप्राप्त्यर्थ व अनिष्ट निवारणार्थ अलौकिक शक्तीची साधना किंवा आराधना म्हणजे धर्म होय.''

(37) डॉ.सुभाषिनी शर्मा - स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास - पृ.81.

(38) वहीं, पृ.100.

(39) डॉ.राजकुमारी सिंह - हिंदी तथा अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन - पृ.175.

(40) डॉ.सुभाषिनी शर्मा - स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास - पृ.92.

(41) वहीं

(42) वहीं, पृ.99.

****